

को ह्येवान्यात्कः प्राणायत् । येष आकाश आनन्दो न स्यात् TAITT. UP. 2, 7. — 2) nach Luft schnappen, lechzen: यदा स्म ते विरोक्तो अन्तर्गतमिवानन्ति AV. 4, 4, 3. अन्त्रेव प्राणान्परिदीर्णः शिष्ये ऋत. Br. 2, 5, 3. परिदीर्णा अन्त्यश्च प्राणान्त्यश्च शिष्ये २, 2. — 3) gehen NAIGH. 2, 14. — Caus. आनयति. — Desid. अन्निषति P. 6, 1, 3, Sch. 8, 4, 21, Sch.

— अथ ausathmen: अन्तश्चरति रोचनास्य प्राणादपान्ती RV. 10, 189, 2. अपानन्ति प्राणान्ति पुरुषो गभं अन्तरा AV. 11, 6, 14, 7. यो अपानेनापानन्ति स त आत्मा सर्वात्तरः ऋत. Br. 14, 6, 5, 1. = BRH. ÂR. UP. 3, 4, 1. यदे प्राणिति स प्राणो यदपानिति सो अपानः । — तस्मादप्राणान्नपानन्वाचमभिव्याहृति KHAND. UP. 1, 3, 3. तस्मादकमेव व्रते चेतप्राणायज्ञैवापान्याञ्च ऋत. Br. 14, 6, 5, 34. (= BRH. ÂR. UP. 1, 5, 23.) मुखेन मुखं संधायामिप्राणायपान्यात् 9, 4, 9. (= BRH. ÂR. UP. 6, 4, 10.) मुखेन मुखं संधायपान्याभिप्राणयात् 10. (= 11.)

— अन्यप anathmen: यद्यपानेनाभ्यपानितम् AIT. UP. 3, 11.

— अथ einathmen: अवानिति ऋत. Br. 4, 3, 2, 6. अन्वानन् 6, 1, 5. एतो दिशमन्वानन्तमृता कुम्भं प्रतीयानपेतमाण एहि 13, 8, 3, 4. KÂTJ. ÇR. 21, 4, 6. an der betreffenden Stelle: अन्वानं मृता. — Vgl. अन्वानम्.

— उद् 1) hinaufathmen: उद्गन्धयुदनिति ऋत. Br. 4, 1, 2, 27. य उद्गानेनोदनिति (BRH. ÂR. UP. 3, 4, 1: उद्गानिति; vgl. u. अन् mit वि) स त आत्मा सर्वात्तरः 14, 6, 5, 1. उद्गन्थात् 4, 6, 1, 7. उद्गन्धिषुर्महोरिति तस्मादुद्गन्धयुते AV. 3, 13, 4. — 2) ausathmen: इमाः प्रजाः प्राणान्त्यश्चोदन्त्यश्चात्तरीन्तमनुचरति ऋत. Br. 3, 8, 3, 2, 4, 1, 3, 16.

— अन्धुद् anathmen, anhauchen: अमुं ह्येव लोकमुद्गन्धयुदनिति ऋत. Br. 4, 1, 2, 27.

— उप, s. उपान.

— परा, पराणिति P. 8, 4, 19, Sch. — Caus. पराणिणत् 21, Sch. — Desid. पराणिणिषति ebend.

— परि, पर्यनिति PAT. zu P. 8, 4, 19.

— प्र, प्राणिति P. 8, 4, 19, Sch. प्राणिति oder प्रानिति VOP. 8, 22, 9, 27. प्राणत् P. 7, 3, 99, Sch. 1) einathmen: यत्प्राणेन न प्राणिनि येन प्राणः प्राणियते (dem Sinne nach ein pass. von प्रान्; eine ähnliche Gleichstellung von अन् und नी wird man u. 3. finden) KENOP. 8. ÇAMK. erklärt प्राण durch प्राणं und प्राणिनि durch riechen. Vgl. noch u. dem simpl., u. अथ und u. उद्. — 2) athmen: मया सो अन्नमिति यो विपर्ययति यः प्राणिनि य ई प्रुणोत्पुक्तम् RV. 10, 123, 4. यद्विरोचते प्र चानन्ति वि च चष्टे शचीभिः AV. 7, 23, 2. यच्च प्राणिनि यच्च न BRH. ÂR. UP. 1, 5, 1. प्राणीत् BHATT. 15, 102. प्राणिषुः 108. यो विश्वस्य जगतः प्राणतस्पतिः RV. 4, 101, 5. यत्प्राणनिमिषञ्च यत् AV. 10, 8, 2, 11, 2, 10. 12, 1, 3. एतप्राणनिमिषञ्च MUNP. UP. 2, 2, 1. प्राणतः प्राणेन ऋत. Br. 14, 9, 2, 8—12. = BRH. ÂR. UP. 6, 1, 8—12. — 3) wehen: वायुर्वै प्रणीर्यज्ञानो यदा हि प्राणित्यय यज्ञो ऽवामिहोत्रम् AIT. Br. 2, 34. — 4) leben: येन प्राणन्ति वीर्यः AV. 1, 31, 1. 10, 8, 19. 10, 5. 11, 6, 10. 9, 23. 13, 3, 3. कथं प्राणिमि दुर्गतः BHATT. 18, 10. प्राणिवत्त्व मानार्थम् 4, 38. न जिजीवासुखी तातः प्राणता रक्षितस्त्वया 14, 58. न प्राणिषि डुराचार 9, 57. प्राण 14, 60. — Caus. athmen machen, beleben: यो मारयति प्राणयति यस्मात्प्राणन्ति भुवनानि विश्वा AV. 13, 3, 3. प्राणयत्तमरिम् (von प्रा० abhängig) BHATT. 9, 101. प्राणिणत् P. 8, 4, 21, Sch. — Desid. प्राणिणिषति P. 6, 1, 3, Sch. 8, 4, 21, Sch.

— अन्धुप्र nachathmen, hinterher athmen: प्राणं देवा अन्धुप्राणन्ति TAITT. UP. 2, 3.

— अभिप्र beenathmen: इमां (die Erde) ह्येव प्राणान्भिप्राणिनि ऋत. Br. 4, 1, 3, 7. यदि प्राणेनाभिप्राणितम् AIT. UP. 3, 11. स यद्विन्तप्राणेनाद्यैक्यदभिप्राणयै ह्येवात्रमत्रस्पत् 4; vgl. auch u. अथ.

— वि 1) athmen: अथ्यन्तश्च व्यनश्च सन्ति RV. 10, 120, 2. — 2) den Athem durch den Körper durchathmen: व्यनन्नभिव्यनिति ऋत. Br. 4, 1, 3, 27. यो व्यनेन व्यनिति (BRH. ÂR. UP. 3, 4, 1: व्यानिति; vgl. अन् mit उद्) स त आत्मा सर्वात्तरः 14, 6, 5, 1.

— अग्निवि durchathmen: अन्तरितं ह्येव व्यनन्नभिव्यनिति ऋत. Br. 4, 1, 3, 27.

— सम् aufathmen, zum Leben kommen: अद्या ममार् स ह्यः समान RV. 10, 33, 5.

1. अन् Pronominalstamm der 3ten Person, von dem sich nur der instr. sg. अन्नेन, अन्नेया und der gen. loc. du. अन्नेयोस् in der klass. Sprache vorfinden, P. 7, 2, 112. VOP. 3, 128. Vgl. एन् und über den Gebrauch s. u. इद्म्.

2. अन् (von 2. अन् m. Hauch, Athem: एषा (वाक्) हि न प्राणो अपानो व्यान उपानः समानो ऽन इत्येतत्सर्वम् ऋत. Br. 14, 4, 3, 9. (= BRH. ÂR. UP. 1, 5, 3.) तदनमन्यं (POLEY: तेदनम्) कुर्वतो मन्यते 14, 9, 3, 15. (= BRH. ÂR. UP. 6, 1, 14.) तदा एतदनस्यान्नमनो ह वै नाम प्रत्यक्षम् KHAND. UP. 5, 2, 1. अनेनैव तद्व्यते ऋत. Br. 14, 4, 4, 18. (= BRH. ÂR. UP. 1, 3, 17.) Im letzten Beispiel kann अनेन auch pron. sein, DIVYED. und ÇAMK. erklären es durch प्राणेन. — Vgl. अन्वत्.

3. अन् nicht AK. 3, 5, 11, Sch. beruht auf einer spitzfindigen Erklärung.

अन्श (3. अ + अंश) adj. keinen Antheil an der Erbschaft habend: अन्शो ज्ञातिपतिता M. 9, 201.

अन्धुमत्पला = अन्धुमत्पला (?) GÂTÂDH. im ÇKDR.; s. कदली.

अनक adj. = अणक, अघम BHARATA zu AK. im ÇKDR.

अनकडुन्डभ (अनक + डुन्डभ = डुन्डभि) N. pr. Vasudeva's Vater H. 223, Sch. — Vgl. आनकडुन्डभि.

अनकस्मात् (3. अ + अकस्मात्) adv. nicht unerwartet u. s. w. gaṇa चार्वादि.

अनन्त (3. अ + अन्त = अन्ति) adj. ohne Augen, blind: प्रति श्रेण स्याद्व्यनमगवष्ट RV. 2, 13, 7.

अनन्त (3. अ + अन्त Auge) adj. dass.: अपानन्तातो बधिरा अन्तासत RV. 9, 73, 6. 10, 27, 11.

अनन्तर (3. अ + अन्तर) adj. 1) lautlos, stumm: मुखम् BHAR. 2, 46. — 2) nicht geeignet ausgesprochen zu werden (Rede) AK. 1, 1, 5, 21. H. 266.

अनन्तस्तम्भम् (von 3. अ + 1. अन्त — स्तम्भ) adv. so dass die Wagenaxe nicht gehemmt wird: ते (यूयं) वा अनन्तस्तम्भं वृष्टेडुत् ह्येनमन्सा वृक्षति तथानो न प्रतिवापते ऋत. Br. 3, 6, 4, 11. = KÂTJ. ÇR. 6, 1, 14.

अनन्ति (3. अ + अन्ति) n. ein schlechtes Auge (अन्तान्ये ऽन्तिणि) H. 576.

अनगार (3. अ + अगार) m. ein Büsser, der sein Haus aufgegeben hat und ganz religiösen Betrachtungen lebt, H. 76.

अनगारिका (von अनगार) f. das obdachlose Leben eines Büssers, eines religiösen Bettlers: स चेदगारान्गारिकां प्रव्रजिष्यति LALIT. P. in BURN. Lot. de la b. I. 581.

अनग (3. अ + नग) adj. nicht nackt: अनग्रा सर्वे पृथक्त्वा ये अन्त्ये AV. 12, 3, 51. RV. 3, 1, 6. ऋत. Br. 1, 3, 3, 8. 14, 9, 3, 15. = BRH. ÂR. UP. 6, 1, 14.